C-7a U-2a Sanskrit

Q. संस्कृत शिक्षक के व्यक्तित्व एवं गुणों का वर्णन NCF 2005 के आधार पर करें।

Ans: राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के आधार पर भाषा-शिक्षण के लिए जो शिक्षा-शास्त्रीय आधार विकसित की गई उनमें मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण-प्रक्रिया पर बल दिया गया और भाषाओं में दक्षता विकसित करने के लिए भाषा-शिक्षक को विशेष रूप से भाषायी नवाचारों को अपनाने पर बल दिया गया। उन शिक्षकों को विशेष रूप से बहुभाषी ज्ञानों को प्राप्त करने के लिए विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित करने पर बल दिया गया और इसी आधार पर शिक्षक की भूमिकाएँ इन ज्ञानों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य किया गया जो उनकी भूमिकाओं को स्पष्ट रूप से निर्धारित करता है जो वर्तमान शिक्षक की भूमिका निम्न है:-

(i) एक प्रेरक के रूप में:- संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए जो क्रियाकलाप का आयोजन एक संस्कृत शिक्षक करते हैं या जिस शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करते हैं, इसी से बालकों में रुचि उत्पन्न होती है और एक शिक्षक एक प्रेरक के रूप में अपनी पहचान को स्थापित करते हैं।

(ii) एक नवाचार के रूप में:- एक संस्कृत शिक्षक को

संस्कृत भाषा पर पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक होता है क्योंकि संस्कृत एक शास्त्रीय भाषा है तथा इसका प्रयोग दैनिक बोल-चाल की भाषा के रूप में बहुत कम किया जाता है। इसीलिए रविंद्रनाथ टैगोर ने एक संस्कृत शिक्षक को इन शब्दों में वर्णित किया है -

"एक अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थों में नहीं पढ़ा सकता, जब तक वह स्वयं अभी सीख न रहा हो। एक दीपक दूसरे दीपक को कभी भी प्रज्जवलित नहीं कर सकता जब तक कि उसकी अपनी ज्योति जलती न रहे।"

और यह युक्ति तभी सफल हो सकती है जब एक शिक्षक नवाचार के रूप में अपनी भूमिका को निर्धारित करेंगे तभी उनकी प्रवीणता संस्कृत विषय के प्रति हो सकेगी। एक नवाचार अनेक गतिविधियों को एक गतिविधि से जोड़कर अभिव्यक्त करता है।

(iii) एक सुगमकर्ता के रूप में :- शिक्षक बच्चों को खुद चीजें रचने, गढ़ने, कल्पना करने, अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और शिक्षक वैसा संदर्भ देते हैं जो बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ा दे और बच्चों की सीखना सुगम हो जाय। ऐसे शिक्षक को ही एक सुगमकर्ता कहा जाता है और एक ऐसे सुगमकर्ता को प्रभावी शिक्षण के लिए न्यूनतम अपेक्षाएँ अवश्य होनी चाहिए :-

(i) वह अपने विद्यालय के बच्चों से स्नेह रखता हो और उसके साथ घुल-मिलकर रहने में आनंद महसूस करता हो,

(ii) उसे विषय-वस्तु की जानकारी हो और अपनी जानकारी को बढ़ाने के लिए वह सतत प्रयत्नशील हो,

(iii) अपने विद्यालय के बच्चों की उपलब्धि के लिए वह प्रयत्नशील हो तथा विद्यालय को एक आकर्षक सीखने-सिखाने का केन्द्र बनाने में व्यावहारिक रूप से क्रियाशील हो।

(iv) एक शुद्धोचारक के रूप में:- भाषा अध्यापक का सर्वश्रेष्ठ गुण उसका शुद्धोच्चारण है। यदि उसका उच्चारण शुद्ध होगा, तभी उसके सम्पर्क में आने वाले छात्र का उच्चारण भी स्वतः ही शुद्ध होगा। संस्कृत एक संश्लिष्ट भाषा है। इसमें शब्दों के अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। मंत्रों के अशुद्ध उच्चारण से देवता रुष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार संधियुक्त पदों को गलत ढंग से तोड़ने व उच्चारित करने से भी अर्थ विपरीत हो सकता है। प्राचीन काल में अध्यापक के उच्चारण संबंधी अवयवों- नाक, कान, जिह्वा, ओष्ठ, कंठ, दंत आदि की जाँच इसलिए की जाती थी कि यदि अवयव

ठीक नहीं होगें तो अध्यापक द्वारा शुद्धोच्चारण कर पाना कठिन होगा।

(v) एक कुशल नेतृत्वकर्ता के रूप में :-

एक शिक्षक विद्यालय के समस्त गतिविधि एवं भाषायी ज्ञान के वैचारिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने एवं प्रबंधन करने के रूप में कार्य करते है। यह कार्य एक शिक्षक के दायित्व निर्माण के अंतर्गत ही करते है जिस कारण उन्हें नेतृत्वकर्ता कहा जाता है।

(vi) एक मार्गदर्शक के रूप में :- एक भाषायी शिक्षक भाषा - अधिगमकर्ता में जिस माध्यम से साहित्य - सृजन की क्षमता को विकसित करते है या अभिव्यक्ति को विकसित करने में निर्देशित करते है। यह निर्देशन एक मार्गदर्शक के रूप में मानी जाती है।

उपर्युक्त संस्कृत शिक्षक के गुण एवं उनके शिक्षण की गुणवत्ता को विकसित करने में NCF 2005 के द्वारा निर्देशित की गई है उसके आधार पर उपर्युक्त भूमिका संस्कृत शिक्षण के विकास में अतिउत्तम है।